१९. हमारी पाठशाला

आज सुरेखा और मिहिर सबेरे के समय प्रतिदिन की अपेक्षा शीघ्र‘ जाग गए । माता-पिता की सहायता न लेते हुए वे फटाफट तैयार होने लगे । दोनों पाठशाला जाने की जल्दबाजी में थे । माँ ने पूछा, ‘‘क्या बात है सुरेखा, आज इतनी जल्दी क्यों है ?’’

सुरेखा ने कहा, ‘‘आज हमारी ‘जीवन शिक्षण प्राथमिक पाठशाला’ का ‘स्थापना दिवस’ है । हम लोगों को अल्पाहार मिलने वाला है । हम लोगों ने कल ही अपने वर्ग को स्वच्छ किया है । वर्गों की स्वच्छता और सजावट की प्रतियोगिता है । अपनी पाठशाला मुझे बहुत पसंद है ।’’

पिता जी ने कहा, ‘‘मिहिर, हमारे समय तो बेटा ऐसा कुछ भी नहीं होता था ।’’

मिहिर ने कहा, ‘‘पिता जी, हमारे जन्मदिवस की तरह पाठशाला का भी जन्मदिवस होता है! हमारी पाठशाला खेल, विभिन्न स्पर्धाओं में सर्वप्रथम ही रहती है । हमारी पाठशाला में भाषण प्रतियोगिता होती है । खेल प्रतियोगिता ली जाती है । पिता जी ! परियोजना पूर्ण करना, सैर पर जाना, वार्षिक सम्मेलन में भाग लेना जैसी बातें मैं बहुत उत्साह के साथ करता हूँ ।’’

बताओ तो

- तुम्हारे गाँव की पाठशाला की स्थापना कब हुई थी ?
- तुम अपनी पाठशाला का स्थापना दिवस कैसे मनाते हो ?
- पाठशाला की कौन-सी बातें तुम्हें अच्छी लगती हैं ?

क्या तुम जानते हो

हमारे देश में प्राचीन काल में अध्ययन के लिए विद्‌यार्थी गुरु/आचार्य के घर पर जाया करते थे। वे कुछ वर्ष वहाँ रहकर अध्ययन करते थे । बाद के समय में गाँवों में एक शिक्षक और विभिन्न आयुवर्ग के विद्‌यार्थी एकत्र होते थे । आचार्य उन्हें सिखाते-पढ़ाते थे । विद्‌यार्थी जमीन पर अक्षर, संख्या आरेखित करते थे । उस समय लड़कियों की शिक्षा लगभग दुर्लभ थी । अंग्रेजों द्‌वारा वर्तमान विद्‌यालय प्रणाली प्रारंभ करने पर महात्मा फुले और क्रांतिज्योति सावित्रीबाई फुले जैसे सुधारकों ने पुणे शहर में लड़कियों की शिक्षा का सूत्रपात किया ।

पाठशाला में परिवर्तन : पहले गाँव-गाँव में पाठशालाएँ चलती थीं । बरगद अथवा किसी बड़े छायादार वृक्ष के नीचे विद्‌यार्थी एकत्र होते थे । एक ही शिक्षक विभिन्न आयुवर्ग के विद्‌यार्थियों को पढ़ाया करते थे । इस अध्ययन में पहाड़े, जोड़, घटाव, अक्षर परिचय, गणित का समावेश होता था । अंग्रेजों के भारत में आने पर उन लोगों ने वर्तमान विद्‌यालय प्रणाली प्रारंभ की । लोगों को यह बात समझ में आई कि यदि प्रगति करनी है तो शिक्षा का कोई और विकल्प नहीं है । लोगों ने स्वयं आगे बढ़कर अपने बच्चों को पाठशाला भेजना प्रारंभ किया । इसी कारण आज की पाठशालाओं का निर्माण हुआ है ।

करके देखो

अपने शिक्षक और अभिभावक के माध्यम से पाठशाला और शिक्षा के संबंध में महान कार्य करने वाली निम्नलिखित विभूतियों से संबंधित जानकारी प्राप्त करो ।

महात्मा जोतीराव फुले

सावित्रीबाई फुले

महाराजा सयाजीराव गायकवाड

राजर्षि शाहू महाराज

पंडिता रमाबाई

महर्षि धोंडो केशव कर्वे

डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर

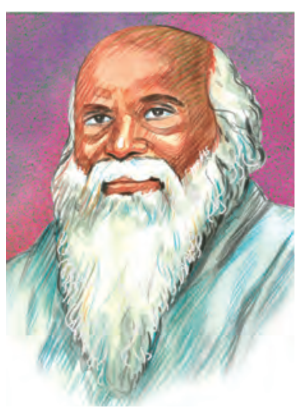

कर्मवीर भाऊराव पाटील

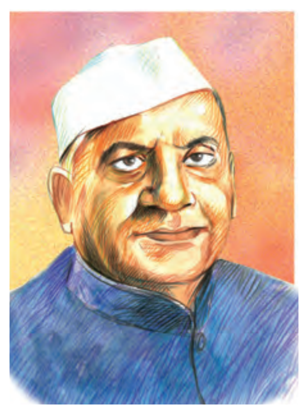

डॉ. पंजाबराव देशमुख

क्या तुम जानते हो

● सावित्रीबाई फुले की पाठशाला की लड़कियों की वार्षिक परीक्षा समाप्त हुई । तब उस पाठशाला को देखने के लिए बहुत-से लोग एकत्र हुए थे । पहले क्रमांकवाली लड़की को पुरस्कार दिया जा रहा था । तब उस लड़की ने कहा, ''मुझे पुरस्कार नहीं चाहिए । मुझे पाठशाला के लिए पुस्तकालय चाहिए ।'' यह लड़की घर पर रात में देर तक अध्ययन करती थी । जोतीराव-सावित्रीबाई ने विद्यालय के छात्रों तथा छात्राओं को कृषि तथा तकनीकी शिक्षा देने की व्यवस्था की ।

● हमारे राष्ट्रगीत 'जनगणमन' की रचना गुरुदेव रवींद्रनाथ ठाकुर द्‌वारा की गई है । उन्होंने पश्चिम बंगाल में बोलपुर नामक स्थान पर एक विद्यालय प्रारंभ किया । यह विद्‌यालय हरे-भरे वृक्षों, रंग-बिरंगे फूलों, चहकते पक्षियों, नीले आकाश जैसे परिसर में लगता था । इस विद्‌यालय का नाम 'शांतिनिकेतन' है । बच्चों को यह विद्‌यालय बहुत पसंद था । वहाँ का वातावरण अत्यंत शांत था । कोई गड़बड़ या शोरगुल नहीं । मोटरकार की आवाज नहीं । ताँगों की खड़खड़ाहट नहीं । ऐसी यह पाठशाला वृक्षों के नीचे लगती थी । इस पाठशाला में नृत्य, गायन सिखाया जाता था । हस्तकला और हस्तव्यवसाय भी सिखाते थे । बच्चे स्वयं ही नाटक तैयार करते थे । गीत गायन, नृत्य तथा उसके साथ-साथ नवीन विषयों को भी सीखते थे । इस विद्‌यालय में बाहरी देशों के बच्चे भी सीखने के लिए आते थे । ठाकुर को १९१३ में नोबेल पुरस्कार प्रदान किया गया। इस पुरस्कार की पूरी राशि उन्होंने अपने विद्‌यालय को दे दी ।

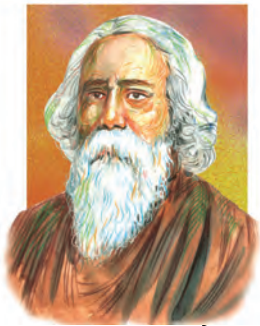
रवींद्रनाथ टागोर

महात्मा गांधी

● शिक्षा के संबंध में महात्मा गांधी के विचार महत्त्वपूर्ण हैं । उनके शिक्षा संबंधी विचार में श्रम संस्कार, स्वत: प्रयोग द्‌वारा सीखना जैसी बातों पर विशेष बल दिया जाता था ।

● मौलाना आजाद स्वतंत्र भारत के प्रथम शिक्षामंत्री थे । अपने 'विश्वविद्‌यालय शिक्षा आयोग' और 'माध्यमिक शिक्षा आयोग' की स्थापना की 'विश्वविद्‌यालय अनुदान आयोग' की स्थापना में भी आपकी भूमिका महत्त्वपूर्ण थी । उनका दृढ़ विश्वास था कि विज्ञान और तकनीकी का समावेश पाठ्‌यचर्या में होना चाहिए । ११ नवंबर यह उनका जन्मदिन देशभर में 'राष्ट्रीय शिक्षा दिवस' के रूप में मनाया जाता है ।

मौलाना आजाद

बताओ तो

- पाठशाला के मैदान पर कौन-कौन-से खेल खेले जाते हैं ?
- पाठशाला को हम कैसे स्वच्छ रख सकते हैं ?
- उसमें तुम किस प्रकार सहायता करते हो ?
- पाठशाला के कौन-कौन-से उपक्रमों में तुम भाग लेते हो ?
- तुम पाठशाला कैसे आते हो ?

हम पाठशाला में नित-नवीन बातें सीखते हैं । कविता और गीत गाते हैं । चित्र बनाते हैं । पाठशाला में हमें खेलने का भी अवसर मिलता है । पाठशाला में हम खो-खो, कबड्‌डी, लेजिम जैसे खेल खेलते हैं । हमें विद्‌यालय नियमित रूप से जाना चाहिए । विद्‌यालय में समय पर जाने से

हमें समयबद्ध होने की आदत पड़ती है । पाठशाला में हम यह भी सीखते हैं कि हमें स्वयं को किस प्रकार स्वच्छ रखना चाहिए । पाठशाला के कारण ही हम सार्वजनिक स्वच्छता का महत्त्व भी समझते हैं । व्यक्तिगत और सार्वजनिक स्वच्छता से हमारा स्वास्थ्य उत्तम बने रहने में सहायता मिलती है ।

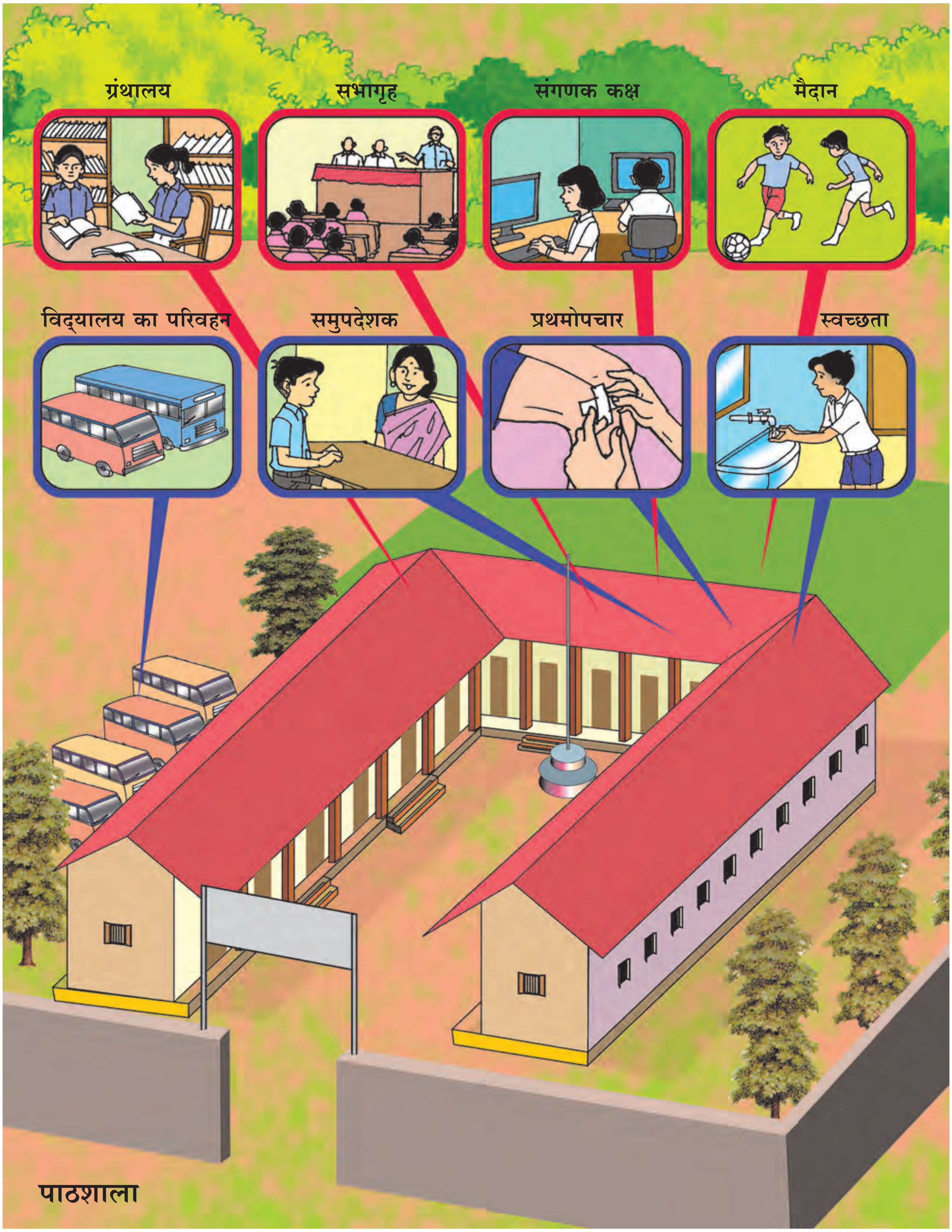

इसे सदैव ध्यान में रखो

कुछ पाठशालाओं में प्रत्येक वर्ग के २-३ विद्यार्थी बारी-बारी से विद्यालय बंद होने पर प्रतिदिन अपने वर्ग का कूड़ा-कचरा साफ करते हैं । वर्ग स्वच्छ करते हैं । इससे उनमें श्रमदान की आदत पड़ती है । पाठशाला तथा वर्ग के प्रति उनमें अपनापन निर्मित होता है । क्या तुम्हारे विद्यालय में ऐसी व्यवस्था है ? न हो तो वर्ग को स्वच्छ रखने के लिए महीने भर की समय-सारिणी तैयार करो । सभी विद्यार्थियों को उसमें सहभागी बनाओ । वर्ग की स्वच्छता के लिए रोटेटरी शील्ड अथवा प्रोत्साहन के लिए प्रशस्तिपत्र दे सकते हैं ।

बताओ तो

- पानी की टंकी के पास भीड़ तथा गड़बड़ी क्यों हुई है ?
- पाठशाला की सुविधाओं का उपयोग करते समय किन नियमों का पालन करना चाहिए ?
- पाठशाला के अनुशासन संबंधी नियमों का हम अन्यत्र कहाँ उपयोग कर सकते हैं ? हम सब को पाठशाला अच्छी लगती है ।

पानी की टंकी के पास भीड़

विद्यालय में पुस्तकालय, मैदान, संगणक कक्ष इत्यादि की सुविधाएँ होती हैं । हम उनका उपयोग भी करते हैं । इन सुविधाओं का लाभ सबको लेना चाहिए । इनका उपयोग करते समय हम सभी को नियमों का पालन करना चाहिए । सुविधाओं का उपयोग करने के लिए कतार में खड़ा होना चाहिए । पुस्तकालय की पुस्तकें समय पर वापस करनी चाहिए । पुस्तकों को खराब नहीं करना चाहिए और न ही उनके पन्ने फाड़ने चाहिए । वर्ग की बेंच तथा दीवारें स्वच्छ रखनी चाहिए । खेल समाप्त होते ही खेल की सामग्री ठीक स्थान पर रखनी चाहिए ।

बताओ तो

- सहपाठियों या सहेलियों में कभी-कभी कहा-सुनी क्यों होती है ?
- कहा-सुनी को शांति से निपटाने के लिए तुम क्या करोगे ?
- जिनसे कहा-सुनी हुई है, उनसे परस्पर मेल-मिलाप करने के बाद कैसा व्यवहार करोगे ?
- आपसी वाद-विवाद को हल करने के लिए क्या शिक्षकों की सहायता लोगे ?

कुछ लड़के-लड़कियों में कहा-सुनी हो रही है, उसमें शिक्षक हस्तक्षेप कर रहे हैं ।

हमारे मित्रों में परस्पर विवाद संभव है परंतु हमें समझदारी तथा शांति के साथ उसको हल करना चाहिए । ऐसे विवाद में सभी को अपनी बात कहने का अवसर मिलना चाहिए। विवाद के कारण किसी को भी शारीरिक क्षति नहीं होनी चाहिए । यदि विवाद समाप्त न हो रहा हो तो शिक्षकों की सहायता लेनी चाहिए । विवाद को शांतिपूर्वक निपटाने की आदत उपयोगी होती है। ऐसी आदतों से हम सामूहिक जीवन की समस्याओं को समझदारी से हल कर सकते हैं । सामूहिक जीवन संबंधी प्रश्नों को शांति के साथ हल करने से हमारी बहुत-सी समस्याएँ अपने-आप हल हो जाती हैं ।

बताओ तो

क्या तुम्हारे आसपास पाठशाला न जानेवाले बच्चे हैं ? वे पाठशाला क्यों नहीं जाते ? प्रत्येक लड़के-लड़की को पाठशाला जाने का अवसर मिलना चाहिए । पाठशाला सबके लिए होती है । पाठशाला के कारण हममें दूसरों के साथ मिल-जुलकर रहने की आदत का निर्माण होता है । विभिन्न प्रकार के लोगों से हमारा परिचय बढ़ता है । हमें यह बोध होता है कि हम भी समाज का एक अंग हैं ।

क्या तुम जानते हो

१४ वर्ष से कम आयुवाले लड़के-लड़कियों को कारखानों, खानों अथवा किसी अन्य खतरनाक स्थान पर काम पर रखना वर्जित है । वर्ष २००६ में शोषणविरोधी अधिकार को अधिक व्यापक बनाते हुए सभी प्रकार की बालमजदूरी को कानून के अनुसार अपराध निर्धारित किया गया है ।

हमने क्या सीखा

* व्यक्तिगत तथा सार्वजनिक स्वच्छता द्‌वारा हमारा स्वास्थ्य उत्तम बना रहता है ।
* हम सभी को पाठशाला अच्छी लगती है ।
* सामूहिक जीवन संबंधी अपनी समस्याओं तथा विवादों को समझदारी और शांतिपूर्वक मार्ग से सुलझाना चाहिए ।
* प्रत्येक लड़के-लड़की को पाठशाला जाने का अवसर मिलना ही चाहिए ।

स्वाध्याय

(अ) नीचे दिए गए प्रत्येक प्रश्न का उत्तर एक-एक वाक्य में लिखो :

(१) पाठशाला में हमें कौन-कौन-से खेल खेलने का अवसर मिलता है ?
(२) पाठशाला में हमारे लिए कौन-सी सुविधाएँ होती हैं ?
(३) आपसी विवाद को किस प्रकार सुलझाना चाहिए ?

(आ) रिक्त स्थानों में उचित शब्द लिखो :

(१) सही समय पर पाठशाला जाने से हमें .... की आदत पड़ती है ।
(२) पुस्तकालय की .... समय पर वापस करनी चाहिए ।
(३) प्रत्येक विद्‌यार्थी को पाठशाला जाने का .... मिलना चाहिए ।

(इ) सही कथनों के सामने ✓ ऐसा और गलत कथनों के सामने X ऐसा चिह्न बनाओ :

(१) पुस्तक के पन्ने नहीं फाड़ने चाहिए । ☐
(२) खेल समाप्त होते ही खेल सामग्री सही जगह पर नहीं रखनी चाहिए । ☐
(३) पाठशाला सभी के लिए होती है । ☐

उपक्रम

(१) विद्‌यालय में की गई पीने के पानी की पुरानी तथा नवीन सुविधाओं के संबंध में कक्षा में चर्चा का आयोजन करो ।
(२) हमारी पाठशाला आदर्श पाठशाला बने, इसके लिए तुम सब मिलकर कौन-से प्रयास करोगे ? इस संबंध में एक छोटा कृति कार्यक्रम तैयार करो ।
(३) तुम्हें किसी अन्य पाठशाला में जाने का अवसर प्राप्त हुआ है । तुम अपनी पाठशाला और उस पाठशाला की तुलना करो ।
(४) तुम्हारी पाठशाला के कार्यक्रमों में उपहार के रूप में पुष्पगुच्छ देने के स्थान पर उपहार के रूप में 'पौधा' दो । दूसरों से भी ऐसा करने का निवेदन करो ।
(५) अपने परिसर के आस-पास के किसी दूसरे विद्‌यालय के शिक्षकों से साक्षात्कार करके वहाँ के विशिष्ट उपक्रमों का लेखन करो ।
(६) विद्‌यालय संबंधी गीत एकत्र करो ।
उदा. टिन टिन टिन घंटी बजी
आओ स्कूल चलें हम

***